विद्युत दर्पण

पश्चिम क्षेत्रीय विद्युत समिति
गृह पत्रिका

अंक - 14 अक्तूबर - दिसम्बर 2009

सम्पादकीय

शरद ऋतु का प्रभाव अक्तूबर-दिसम्बर तिमाही में बना रहा । शरद ऋतु में संपूर्ण प्रकृति में सृजन का वातावरण बन जाता है । प्रकृति हमें एक नये उत्साह के साथ अपने कर्तव्य करने के लिए प्रेरित करती है । इस बार इस तिमाही में हमने प्रकृति के कई करिश्में देखें । नव वर्ष की पूर्व संध्या पर अर्थात 31 दिसम्बर 2009 को हुआ चन्द्रग्रहण खगोल प्रेमियों के लिए एक स्वर्णिम अवसर रहा । अंग्रेजी में जिसे ''वन्स इन ब्लू मून'' कहते हैं उस ब्लू मून का नज़ारा भी हमें दिसम्बर माह में दिखायी दिया । एक कैलेंडर माह में दो पूर्णिमाएँ आने पर उसे 'ब्लू मून' कहते हैं, जैसी कि 3 दिसम्बर और 31 दिसम्बर 2009 को आयी थी । नवम्बर माह में आए 'फयान' नामक चक्रवात तूफान ने चारों ओर तबाही मचा दी । लेकिन विद्युत आपूर्ति की दृष्टि से देखें तो इसे ''विनाश में छिपा वरदान'' माना जा सकता है । हालांकि इस अवधि में विद्युत की अधिकतम मांग दर्ज हुई लेकिन फयान के कारण वातावरण में आई ठंडक के कारण विद्युत की मांग में कमी हुई जिससे रबी मौसम में भी मांग के अनुरूप विद्युत आपूर्ति की जा सकी । पिछले वर्ष की इस अवधि की तुलना में इस वर्ष इस तिमाही में आवृत्ति एवं वोल्टता प्रोफाइल अच्छा रहा ।

शरद ऋतु में प्रकृति की शीतलता के साथ आगे बढ़ते हुए अब वसंत की आहट सुनाई देने लगी है । प्रकृति के इस परिवर्तन के साथ हमें भी अपने जीवन में अच्छे परिवर्तन लाने हैं ।

शुभकामनाओं सहित ।

(मनजीत सिंह)
सदस्य सचिव

ऐसा लगता है, मानो विश्व की एकता को संभव बनाने के लिए प्रकृति ने भारत भूमि में एकता का प्रयोग किया है ।

महाकवि दिनकर

राजभाषा समाचार

- नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, उत्तर मुंबई द्वारा 16 दिसम्बर 2009 को आयोजित ''चौपाल'' में श्रीमती तरूप्रभा शैल, हिन्दी अनुवादक ने भाग लिया । इस कार्यक्रम में उन्हें विशेष पुरस्कार प्रदान किया गया ।

- भारतीय राजभाषा परिषद् द्वारा दिनांक 9 दिसम्बर 2009 से 11 दिसम्बर 2009 तक जगन्नाथ पुरी, में आयोजित 'अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन' में श्रीमती तरूप्रभा शैल, हिन्दी अनुवादक और श्री शिवकुमार हरिद्वाज, आशुलिपिक ने भाग लिया ।

- दिनांक 10 नवम्बर 2009 को आयोजित हिन्दी कार्यशाला में श्री एम.एम.धकाते, कार्यपालक अभियंता ने राजभाषा नीति अनुपालन पर व्याख्यान दिया एवं हिन्दी पखवाड़ा 2009 में प्राप्त हिन्दी निबंधों पर चर्चा की। इस कार्यशाला में कुल 19 अधिकारियों / कर्मचारियों ने भाग लिया ।

- दिनांक 17 दिसम्बर 2009 को आयोजित हिन्दी कार्यशाला में श्री शिव कुमार हरिद्वाज, आशुलिपिक ने 'आकृति सॉफ्टवेयर पर हिन्दी कार्य' विषय पर व्याख्यान दिया । कुल 18 अधिकारियों / कर्मचारियों ने भाग लिया ।

- राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 88वीं बैठक दिनांक 25 नवम्बर 2009 को श्री मनजीत सिंघ, सदस्य सचिव की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई ।

बिदाई

- श्रीमती कुलदीप कौर, मुख्य लिपिक की दिनांक 1 नवम्बर 2009 से स्वैच्छिक सेवा निवृत्ति पर उन्हें भावभीनि बिदाई दी गई । पश्चिम क्षेत्रीय विद्युत समिति परिवार की ओर से श्रीमती कुलदीप कौर को स्वस्थ एवं सुखमय सेवानिवृत्त जीवन की शुभकामनाएँ !

रिश्ते कल आज और कल

श्रीमती सुमेधा राजाध्यक्ष,
अवर श्रेणी लिपिक

'ना जाने कैसे पल में बदल जाते हैं, ये दुनिया के बदलते रिश्ते' रेडियो मिर्ची पर यह गाना सुनकर मैं सोच में पड़ गई । मुझे ऐसे लगा कि इस गाने के बोल कितने अर्थपूर्ण हैं । आज सही मायनों में रिश्ते बदलते नज़र आ रहे हैं ।

हम सब रिश्तों में कितने जुड़े हुए हैं । जन्म से पहले भी हम रिश्तों में बंधे हुए होते हैं । आने वाला मेहमान किसी का बेटा-बेटी होता है, तो किसी का पोता-पोती, भाई-बहन । मनुष्य का सबसे पहला रिश्ता होता है वह है माँ के साथ । फिर बाप, भाई-बहन, दादा-दादी, नाना-नानी, मामा-मामी, चाचा-चाची, मांसी, बुआ इन सबके साथ वह कहीं रिश्तों से जुट जाता है ।

पहले के जमाने में सब लोग एक साथ मिलकर रहते थे । घर में जो भी आमदनी हो, वह मिल-बांटकर खाते थे । एकत्र कुटुंब पद्धति होने के कारण, 'यह मेरा' यह भावना नहीं होती थी । जो भी है, 'वह हमारा' यही संस्कार सब पे होते थे । दादा-दादी, चाचा-चाची, मां-बाप इन सबका आदर करना । किसी को कोई परेशानी है, तो वह सब मिलकर सुलझा देते थे । घर में सभी त्यौहार बड़े धूम-धाम से मनाये जाते थे । इससे बच्चों को भी रीति रिवाज़ों का ज्ञान होता था । घर में आई हुई खुशी सबको बताकर बड़ी हो जाती थी । और गम छोटा हो जाता था । पहले के जमाने में रिश्ते सही मायनों में निभाये जाते थे । ऐसा नहीं है कि आज रिश्ते निभाये नहीं जाते, आज इसकी परिभाषा बदल चुकी है । आज बेटा-बहु अपने माँ-बाप से अलग-अलग रह रहे हैं । माँ-बाप नौकरी करते हैं । बच्चे क्रॅच में बड़े हो जाते हैं । माँ-बाप बच्चों को उतना समय नहीं दे पाते । इससे अच्छे संस्कार, रिती-रिवाज़ों से वे वंचित रह जाते हैं । उनमें एक-दूसरे को शेयर करने की भावना नहीं होती । दादा-दादी को वृद्धाश्रम में रखा जाता है । इसलिए बच्चों को उनका प्यार नहीं मिलता और वह रिश्तों को समझते नहीं ।

आज कोई भी त्यौहार हो, या तो शादी, जन्म दिन की पार्टी में लोग एक-दूसरे से मिलते हैं । तभी बच्चों को चाचा, मामा आदि रिश्तों का पता चलता है ।

इनमें एक रिश्ता है - सास बहु का । पहले बहु घर में होने की वजह से किसी ना किसी कारण सास-बहु में कड़वाहट होती थी, पर आज यह रिश्ता बदल चुका है । आज की बहु बेटे के साथ ही नौकरी करती है । आज की इस घड़ा में चलने वाले जीवन में बहु अपने कर्तव्य पूरे करने की कोशिश करती है और सास भी उसकी उलझन को समझकर उसे मदद करती है । इसलिए आज की बहु अपने सास-ससुर को अपना माता-पिता मानती है ।

इनमें एक रिश्ता है पति-पत्नी का । पहले पति का घर के बाहर जाकर पैसे कमाना, बाहर के सारे काम करना यह काम होता था, और पत्नी घर में खाना बनाना बच्चों की देखभाल करना यह काम करती थी । आज पत्नी पति के साथ ही नौकरी करती है और पति भी उसे घरे के कार्यों में मदद करता है ।

आज जैसे भी हो हम रिश्तों को निभाने की कोशिश करते हैं पर मुझे यह डर है कि आने वाले कल में रिश्ता यह शब्द ही लोगों को पता नहीं होगा । तब सिर्फ एक ही रिश्ता होगा वह दोस्ती का ।

गागर में सागर

(हिन्दी पखवाड़ा - सितम्बर 2009 के दौरान आयोजित हिन्दी स्लोगन प्रतियोगिताओं की कुछ उल्लेखनीय प्रविष्टियाँ)

सारे संसार की अब है एक ही आस ।
बूंद-बूंद पानी बचाकर बुझाएँ सबकी प्यास ।।

श्रीमती सुमेधा राजाध्यक्ष, अ.श्रे.लि.

राजभाषा हिन्दी का प्रचार ।
देश का उद्धार ।।

श्रीमती मुनीरा शेख, अ.श्रे.लि.

पानी जीवन दान है देता,
ऐसे ही न बहाओ नाली में ।
सोचो जहाँ नहीं है पानी,
इंसान, पशु-पंछी जीए बेहाली में ।।

श्रीमती कुलदीप कौर, मुख्य लिपिक

आओ बातचीत करें हिन्दी में,
हर शब्द लिखें हिन्दी में ।
गाने गायें हिन्दी में,
हस्ताक्षर से लेकर सारे काम करें हिन्दी में ।।

श्रीमती आरती देशमुख, अ.श्रे.लि

काव्य कुंज

गहरी नींद में, देखा सपने में ,
खोया हूँ मैं, बहुत दूर आया हूँ ।
पर कोई नहीं मुझे ढूँढने वाला,
तो क्या कोई नहीं मेरी परवाह करने वाला ।।

चौंका, जाग उठा, सोच में डूबा,
अपनेपन का रिश्ता न कभी जाना ।
ठान लिया आज कर दिखाऊँगा,
रिश्तों की दूरियों को मिटाऊँगा ।।

लिखे खत रिश्तेदारों को,
ई-मेल भी किए साथियों को ।
जो पास थे वो जुड़े स्पर्श से,
अजनबियों को जोड़ा मुस्कान से ।।

चारों ओर, प्यार ही प्यार बिखेरा,
मैं बदल गया हूँ, सबने माना ।
यश, कीर्ति, धन पाना था आसान,
आज मैंने अपनों का प्यार पाया।।

अगर मैं चला जाऊँ यहाँ से,
नहीं भूलेगा कोई अब मुझे,
बेफिक्र नींद में सो जाता हूँ,
क्योंकि खोया गर तो ढूंढेंगे सब मुझे ।।

सृजन शैल
सुपुत्र श्रीमती तरूप्रभा शैल